National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multinationaljournal.com
E-ISSN: 2455-9040
Received: 26-09-2026, Accepted: 26-10-2026, Published: 10-11-2026
Volume 11, Issue 4, 2026, Page No. 27-31

यूनानी चिकित्सा पद्धति में इस्तेमाल किए जाने वाले औषधीय पुष्प

किरण नेगी*
अनुसंधान अधिकारी (वनस्पति) औषधि मानकीकरण अनुसंधान एकक (केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद) आयुष मंत्रालय , भारत सरकार, नई दिल्ली, भारत

DOI: https://doi.org/10.66856/njmrd.2026.11.4.11089

सारांश
पुष्प प्रकृति का एक ऐसा अनमोल उपहार है जो अपनी सुंदरता और सुगंध के साथ साथ औषधीय गुणों से भरपूर होते हैं। इनमें एंटीबैक्टिरीअल , एंटीफंगल, एंटी– इंफलेमेटोरी, एंटीमाइक्रोबियल, एंटीऑक्सीडेंट आदि गुण पाए जाते हैं। यही कारण है कि प्राचीन काल से ही इनका उपयोग विभिन्न प्रकार के रोगों से बचाव के लिए किया जाता है। प्रस्तुत पत्र में ऐसे ही कुछ पुष्पों का वर्णन विस्तार से किया गया है जिनका उपयोग यूनानी चिकित्सा पद्धति में बहुयात से किया जाता हैं।

मूल शब्दः पुष्प, यूनानी चिकित्सा पद्यति, विस्तार वर्णन

प्रकृति ने मानव को एक अनमोल उपहार प्रदान किया है जिसे हम फूल, पुष्प, सुमन, कुसुम, प्रसून, मंजरी और गुल आदि नामों से जानते हैं। [1] प्राचीन काल से ही पुष्प मानव जीवन का अभिन्न भाग रहे हैं। यह न केवल सौन्दर्य और सुगंध का प्रतीक हैं, बल्कि आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक रूप से भी महत्वपूर्ण है। मनुष्य को चाहे ईश्वर की आराधना करनी हो, किसी को श्रद्धांजलि देनी हो या फिर किसी का स्वागत सत्कार करना हो, फूलों ने हमेशा से उसका काम आसान किया है। यदि किसी व्यक्ति विशेष को अपने मन की बात व्यक्त करने के लिए शब्द न हों तो फूल ही हैं जो मनुष्य के मनोभावों की अभिव्यक्ति का एक शक्तिशाली माध्यम बनते हैं। [2]

भारतीय संस्कृति में पुष्प का उच्च स्थान है। अनंत काल से ही इन्हें धार्मिक आस्था और श्रद्धा का प्रतीक समझ जाता है। हिन्दू धर्म में भी देवी देवताओं और भगवान पर आरती , व्रत उपवास और पर्वों पर विभिन्न प्रकार के पुष्प चढ़ाए जाते हैं। कोई भी धार्मिक अनुष्ठान, संस्कार व मांगलिक कार्य बिना पुष्प के अधूरा है। [3, 5] सुंदरता के प्रतीक पुष्प मनुष्य जीवन में उल्लास, उमंग और प्रसन्नता के प्रतीक हैं। सदियों से इन्हें जन्मदिन, विवाह और सालगिरह जैसे सामाजिक अवसरों पर सजावट के रूप में उपयोग किया जाता है।

जैविक रूप से फूल पौधे की प्रजनन संरचनाएं हैं जिनसे बीज बनते हैं और जो पीढ़ी दर पीढ़ी जीवन को बनाए रखते हैं। पारिस्थितिक रूप से, फूल कई जीवों के लिए भोजन और आवास प्रदान करते हैं, और परागण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनमें एंटीबैक्टिरीअल , एंटीफंगल, एंटी– इंफलेमेटोरी, एंटीमाइक्रोबियल, एंटीऑक्सीडेंट आदि औषधीय गुण पाए जाते हैं जिसके कारण इन्हें भारतीय चिकित्सा प्रणाली में विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं के निवारण में प्राकृतिक उपचार के रूप में उपयोग किया जाता है। [6]

यूनानी एक प्राचीन चिकित्सा पद्धति है, जिसका जन्म ग्रीस में हुआ। यूनानी चिकित्सा प्रणाली का बुनियादी ज्ञान 980 ई में फारस में हकीम इबन सिना द्वारा एकत्र किया गया था और यह हिप्पोक्रेट्स और उसके अनुयायियों द्वारा चलाई गई। इसके बाद 1868 में भारत में जन्मे अजमल खान ने भारत में इस चिकित्सा प्रणाली के विकास और विस्तार में अपना योगदान दिया । वर्तमान में भारत, पाकिस्तान, पर्शिया और कई देशों में इस उपचार प्रणाली का इस्तेमाल किया जा रहा है। इतना ही नहीं साउथ अफ्रीका व इंगलैंड जैसे देशों में भी लोगों ने यूनानी चिकित्सा प्रणाली की तरफ रुख किया है। [7, 8]

यूनानी चिकित्सा प्रणाली में फूलों का इस्तेमाल औषधि के रूप में विभिन्न रोगों के उपचार के लिए बहुत पहले से ही होता आया है। [9] इनका सेवन पंखुड़ियों के रूप में, जूस और काढ़े के रूप में किया जाता है और टिंचर के रूप में शरीर पर लगाया जाता है। प्रस्तुत पत्र में ऐसे ही कुछ पुष्पों का वर्णन विस्तार से किया गया है जिनका उपयोग यूनानी चिकित्सा पद्धति में बहुयात से किया जाता हैं।

मुख्य भाग :

कर्णफल



कर्णफल जिसे आम भाषा में लौंग के नाम से जाना जाता है मिरटेसी परिवार की औषधीय गुणों से भरी फूलों की कलियाँ हैं जिनका वानस्पतिक नाम सिजिजियम ऐरोमैटिकम है। इन्हें अंग्रेजी में क्लोव और संस्कृत में देवकुसुम, श्रीप्रसून आदि के नाम से भी जाना जाता है। [10, 15] इसकी छोटी लाल– भूरी फूलों की कलियों की तासीर गरम होती है। सदियों से अपने तीखे स्वाद और स्वास्थ्य लाभों के लिए यूनानी चिकित्सा पद्धति में इन्हें विशेष महत्व दिया जाता रहा है। इसमें पाया जाने वाला एक प्रमुख यौगिक यूजेनोल है जो इसमें मौजूद एंटी ऑक्सीडेंट गुणों को बढ़ाता है जिससे यह मौखिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए एक प्राकृतिक विकलप बन जाता है। इसका उपयोग अक्सर मसूड़ों की बीमारी , दांत दर्द और मुंह की दुर्गंध के इलाज के लिए किया जाता है। यह श्वसन स्वास्थ्य के लिया महत्वपूर्ण

सहयोगी है। इसके गरम गुण खांसी , जुकाम और अस्थमा के लक्षणों से राहत दिलाने में सहायक होते हैं। यह कफ निसारक के रूप में काम करती है , जिससे श्वसन नलिकाओं से बलगम साफ हो जाता है और सांस लेना आसान हो जाता है। यह शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं । [14,15]

कुरतुम



कुरतुम एस्टेरेसीए परिवार का एक गुणकारी औषधीय पुष्प है जिसका वानस्पतिक नाम कारथामस टिंकटोरियस है। इन्हे मराठी में करदाई, बंगाली में कुसुम,पञ्जाबी में कुसुंभा या कर, गुजराती में कसूंभो, हिन्दी में करा, कुसुम, कमलोतरा, अंग्रेजी में सैफलावर, संस्कृत में कुसुंभा और उर्दू तथा अरबी में कुरतुम कहा जाता है। [10, 15] यह पुष्प वास्तव में कई छोटे छोटे फूलों (लगभग 20 से 180) का एक समूह होता है जिसे कैपिटुलम कहा जाता है। फूलों के आधार पर बाहर सख्त, चौड़ी और नुकीली हरी पत्तियों का एक घेरा होता है और केंद्र से निकालने वाली गहरे पीले या नारंगी रंग की पंखुड़ियाँ जो बाद में चमकदार लाल हो जाती हैं वास्तव में अलग अगल स्वतंत्र नर और मादा अंगों वाले पूर्ण फूल होते हैं। कुरतुम के फूलों में मौजूद एंटी ऑक्सीडेंट और बायो ऐक्टिव कॉम्पाउंड शरीर के रक्त संचार को बेहतर बनाते हैं। यूनानी चिकित्सा के अनुसार इन फूलों की तासीर गरम होती है। ये फूल कफ को पतला कर बाहर निकालने का काम करते हैं और पुरानी खांसी और अस्थमा की रोकथाम में सहायक होते हैं। इंसके सूखे फूलों का काढ़ा बना कर पीने से कब्ज की समस्या दूर होती है और पाचन तंत्र को मजबूती मिलती है। इनमें मौजूद एंटीइनफ्लेमेटोरी गुण जोड़ों के दर्द और गठिया में राहत प्रदान करते हैं। [14, 15]

बेद मुश्क



बेद मुश्क सेलिकेसीए परिवार का सुगंधित पुष्प है जिसका वानस्पतिक नाम सेलिक्स केप्रिया है। इसे अंग्रेजी में मस्क विलो और हिन्दी तथा पञ्जाबी में बेद मुश्क कहा जाता है। इसके फूल रेशमी, मखमली और बेलनाकार गद्देदार गुच्छों के रूप में दिखाई देते हैं, जिन्हें कैटकिनस कहा जाता हैं। नर पेड़ पर लगने वाले फूल ज्यादा आकर्षक और चमकीले पीले या सुनहरे रंग के होते हैं, जबकि मादा फूल थोड़े हरे–धूसर रंग के होते हैं। खिलने से पहले ये फूल मुलायम फ़र जैसे होते हैं जो छूने में बेहद नरम व मखमली होते हैं। इन फूलों की सबसे बड़ी पहचान इनकी तीव्र, मीठी और कस्तूरी जैसी खुशबू होती है। [10, 15] यूनानी चिकित्सा में इन्हें दिल और दिमाग को ताकत देने वाली एक बेहतरीन प्राकर्तिक औषधि माना जाता है जो मानसिक तनाव और घबराहट को कम करता है। ये फूल दिल की कमजोरी को दूर करने के लिए बेहतरीन कार्डियोटॉनिक का काम करते हैं। यूनानी चिकित्सा पद्धति में इन फूलों का उपयोग अर्क और खमीरा तैयार करने में किया जाता है। खमीरा गोजबान अम्बर बेद मुश्क दिल और दिमाग की ताकत के लिए खाया जाता है। इन फूलों की तासीर ठंडी होती है इसलिए इन्हें गर्मियों के मौसम में शरीर की गर्मी को शांत करने और बुखार को नियंत्रित करने में तथा पाचन तंत्र के सुधार के लिए किया जाता है। [14, 15]

गुल –ए– बनफशा



गुल – ए – बनफशा वायोलेसी परिवार का एक गुणकारी पुष्प है जिसका वानस्पतिक नाम वायोला ओडॉरेटा है। इन्हें हिन्दी, गुजराती, मराठी, उर्दू और फारसी में बनफशा, अंग्रेजी में स्वीट वाइलिट, वाइल्ड वाइलेट या वुड वाइलेट और संस्कृत में नील पुष्प या सूक्षमपत्रा कहा जाता है। इसके बेहद सुगंधित गहरे बैंगनी या सफेद फूल वात – पितहार प्रकृति के होते हैं इसलिए इनसे बना काढ़ा सर्दियों के मौसम में सूखी खांसी, गले की खराश और बलगम को दूर करने में बेहद फायदेमंद माना जाता है और यही कारण है कि इसे सर्दियों की संजीवनी भी कहा जाता है। [10, 15] खमीरा बनफशा और जोशांदा गले के संक्रमण को रोकने वाली प्रभावशाली यूनानी औषधियाँ हैं। बनफशा के फूलों में हल्के रेचक गुण होते हैं जो कब्ज की समस्या को नियंत्रित करने में मदद करते हैं। इनसे बना तेल, रोगन बनफशा , दिमाग को शांत कर तनाव और अनिद्रा की समस्या को दूर करता है और सरदर्द में राहत प्रदान करता हैं। इन फूलों में पाए जाने वाले सूजनरोधी तत्व त्वचा संबंधित रोगों जैसे फोड़े फुंसी, खुजली इत्यादि में राहत प्रदान करते हैं। [14, 15]

गुलनार



गुलनार प्युनिकेसी परिवार का गुणकारी पुष्प है जिसका वानस्पतिक नाम प्युनिका ग्रेनेटम है। इसे हिन्दी में अनार के फूल, बंगाली, मराठी और गुजराती में डालिम फूल, अंग्रेजी में पोमिग्रेनेट ब्लासम और संस्कृत में दाड़िम पुष्प या लोहित पुष्प कहते हैं। यह पुष्प चमकीले नारंगी– लाल रंग के, आकर्षक और शंख (ट्रंपेट) के आकार का होता हैं। इनमें भरपूर मात्रा में पॉलीफेनोल्स, एंटी ऑक्सीडेंट और एंटी इनफ्लेमेटोरी गुण पाए जाते हैं जो शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। [10, 15] यह पाचन तंत्र में सुधार करने , बवासीर की समस्या के समाधान में और त्वचा संबंधी रोगों के सुधार में लाभदायक हैं। इन फूलों का सेवन मधुमेह के नियंत्रण में भी गुणकारी माना जाता है। कुर्स–ए–गुलनार ,शर्बत–ए–गुलनार, जवारिश–ए–गुलनार, सफुफ–ए–गुलनार और कुशता गुलनार यूनानी चिकित्सा पद्धति की कुछ प्रमुख औषधियाँ हैं। [9]

गुल–ए–मदार



गुल–ए–मदार एस्कलएपीडीसी परिवार का एक गुणकारी पुष्प है जिसका वानस्पतिक नाम कैलोट्रॉपिस गिगेटिया है। इसे हिन्दी, बंगाली और पंजाबी भाषा में आक या मदार , अंग्रेजी में क्राउन फलावर, जाइन्ट मिल्कवीड, संस्कृत में अर्क, मंदार और तमिल में एरक्कु भी कहा जाता है। इसके फूल सफेद या हल्के बेंगनी रंग के होते हैं जिसमें दर्द निवारक, रोगाणुरोधी , एंटी बैक्टिरीअल, एंटी ऑक्सीडेंट , साइटोटॉक्सिक और हेपेटो प्रोटेक्टिव आदि गुण पाए जाते हैं। यही कारण है कि प्राचीन काल से ही यूनानी चिकित्सा पद्धति में इसका उपयोग श्वसन विकारों जैसे दमा , खांसी और पुरानी सूजन संबंधी समस्याओं के प्रबंधन में किया जाता है। इससे बनने वाली विशेष यौगिक यूनानी औषधियाँ हबब –ए– गुल –ए – आक , हबब –ए–पपीता विलायती और हबब – ए– सुन्दरिमुन्द्री हैं। [9]

नारमुश्क



नारमुश्क क्लूसिएसी परिवार का एक बहुमूल्य पुष्प है जिसका वानस्पतिक नाम मेसुआ फेरिआ है। इसे हिन्दी, बंगाली, गुजराती, मराठी में नागकेसर, अंग्रेजी में इंडियन रोज चेस्टनट, पंजाबी में नागेश्वर और संस्कृत में नागपुष्प, चमपेय और हेमपुष्प के नाम से जाना जाता हैं। इसके फूल सफेद रंग के होते जिसके बीच में पीले या केसरिया रंग के ढेरों पुंकेसर होते है जिसमें एंटी ऑक्सीडेंट, हेपटोंप्रोटेक्टिव, एंटी इंफलमैटोरी और एंटी माइक्रोबीअल गुण पाए जाते हैं। [10, 15] यही कारण है कि यूनानी चिकित्सा पद्धति में इनका उपयोग पाचन क्रिया को बेहतर बनाने, श्वसन संबंधी समस्याओं में राहत प्रदान करने और ह्रदय संबंधी कार्यों को बढ़ावा देने में किया जाता हैं। हबब –ए– नारमुश्क और जवारिश नारमुश्क पाचन तंत्र को मजबूत करने वाली प्रमुख यूनानी औषधियाँ हैं। [9]

गुल– ए– सुर्ख



गुल –ए– सुर्ख रॉजेसेये परिवार का एक खूबसूरत पुष्प है जिसका वानस्पतिक नाम रोजा दमसीना है। इसे हिन्दी में गुलाब, अंग्रेजी में रोज, दमस्क रोज और संस्कृत में शतपत्री , तरुणी कहा जाता है। इसे फूलों का राजा भी कहा जाता है। अपनी सुन्दरता और सुगंध के कारण इसकी खेती पूरी दुनिया में की जाती है। [10, 15] इसकी पंखडुयों में विविध जैविक और औषधीय गुण पाए जाते हैं यही कारण है कि प्राचीन काल से ही यूनानी चिकित्सा पद्धति में इसका उपयोग व्यापक रूप से होता आया हैं। यकृत , पेट, हृदय और तांत्रिक तंत्र के रोगों में यह एक प्रमुख टॉनिक और औषधि का काम करता है। महान यूनानी विद्वान और चिकित्सक इबबन–ए–सीना गुल– ए–सुर्ख को जिगर के लिए सर्वोत्तम औषधियों में से एक मानते हैं। इसे 'मुक़व्विल–ए–क़लब' हृदय को शक्ति देने वाल और 'मुफर्रेह' मनोदशा सुधारने व उत्साहवर्धक मान जाता है। इसका तेल (रोगन–ए–गुलाबी/रोगन गुल) सिर पर लगाने से अनिद्रा और सिरदर्द में राहत मिलती है। इसकी पंखुड़ियों से बना गुलकंद कई स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है, जिसमें पोषण प्रदान करना, मन को तरोताजा करना, रक्त को शुद्ध करना, याददाश्त बढ़ाना, ऊर्जा बढ़ाना और शरीर के तापमान को संतुलित रखना शामिल हैं। इसे यूनानी नुस्खों जैसे कुर्स –ए–जरिष्क , हबब –ए– सना और माजून दबिद वर्द में बहुयात से इस्तेमाल किया जाता हैं। [9] अर्क–ए– गुलाब एक प्राकर्तिक टोनर का काम करता है और त्वचा को ठंडक तथा नमी प्रदान करता है और आँखों की जलन व थकान को दूर करता है।

ज़ाफ़रान



ज़ाफ़रान इरिडेसी परिवार का एक बहुमूल्य पुष्प है जिसका वानस्पतिक नाम क्रोकस सैटाइवस है। इसे हिन्दी में केसर और संस्कृत में कुमकुम कहा जाता है। भारत में इसकी खेती जम्मू कश्मीर (पंपोर और किश्तवाड) में की जाती है। इसका पुष्प छोटा, सुन्दर, बेंगनी या हल्के नीले रंग का कीपनुमा आकार का होता है जिसके भीतर गहरे लाल या नारंगी रंग के तीन धागे जैसे मादा भाग (वर्तिकाग्र) होते हैं जिन्हें जाफरान कहा जाता है। इसकी गंध तीक्षण और स्वाद कटु पर रुचिकर होता है। जाफरान में मुख्यतः पिक्रकरोसिन (कटु स्वाद), सफ्रनल (सुगंध) और क्रोसिन (सुनहरा पीला रंग) प्रमुख यौगिक पाए जाते हैं। फूलों को छायादार स्थान में सुखाया जाता है फिर मादा भाग (ज़ाफ़रान) को अलग किया जाता है। 450 ग्राम जाफरान के लिए 7500 फूलों की आवश्यकता होती है। यह शुष्क और गरम प्रकृति का होता है। इसमें भरपूर मात्रा में अंटीऑक्सिडेंट और औषधीय गुण होते हैं। [10, 15] यूनानी चिकित्सा पद्धति में इसका उपयोग अवसाद, चिंता और मानसिक तनाव को कम करने के लिए किया जाता है। यह दिल को मजबूती देता है और घबराहट व कमजोरी को दूर करता है। यूनानी नुस्खों में इसे हृदय की शक्ति बढ़ाने वाली दवाओं जैसे खमीरा गोजबान अंबरी जवाहर वाला मुफ़राह बरीद मुफ़राह आजम में शामिल किया जाता है। इसे बेहद शक्तिवर्धक माना जाता है और तांत्रिका रोग तथा श्वसन तंत्र के उपचार में प्रयोग किया जाता है। यूनानी हकीमों के अनुसार एक स्वस्थ वयस्क के लिए जाफरान की दैनिक खुराक 125 मि ग्राम से 250 मि ग्राम तक होनी चाहिए। [14]

जूफा याबिस



जूफा याबिस लैमीसिए परिवार का एक औषधीय पुष्प है जिसका वानस्पतिक नाम हिससोपस ऑफईसीनालीस है। इसे हिन्दी और संस्कृत में जूफा , अंग्रेजी में हिससोपस, मराठी में कान्तिजर और मलयालम में एसोप कहा जाता है। यह औषधीय पुष्प सुगंधित नीले, बैंगनी, गुलाबी या कभी कभी सफेद रंग का भी होता है जिसकी तासीर गर्म और खुश्क मानी जाती है। इसके फूलों में हल्की पुदीने जैसी खुशबू और स्वाद थोड़ा कड़वा होता है। [10, 15] यह पुरानी खांसी, जुकाम, ब्रॉनकैटिस और अस्थमा में बहुत फायदेमंद माना जाता है और यूनानी चिकित्सा पद्धति में इसका उपयोग सीने की जकड़न को पतला कर बाहर निकालने में प्रमुखता से किया जाता है। यह पेट की गैस, अपच और पेट के कीड़ों को भी दूर करता है। इसमें मौजूद एंटी इनफ्लेमेटोरी और एंटी वाईरल गुण शरीर की सूजन काम करने और संक्रमण से लड़ने में सहायक होते हैं। [14, 15] इससे बनने वाली विशेष यौगिक यूनानी औषधियाँ माजून –ए– नानख्वाह और हबब –ए– गेरिकून हैं। [9]

निष्कर्ष

पुष्प केवल सुंदरता और सुगंध के साधन नही हैं, बल्कि वे जैव सक्रिय यौगिकों का एक समृद्ध और प्राकृतिक स्रोत हैं जो यूनानी चिकित्सा पद्धति में विभिन्न रोगों के उपचार में प्रभावकारी हैं । वर्तमान में जलवायु परिवर्तन, अंधाधुंध कटाई और शहरीकरण के कारण ये औषधीय पुष्प लुप्त होने के कगार पर हैं । अतः हमें वैज्ञानिक विधियों और व्यावहारिक तरीकों से इनके संरक्षण का प्रयास करना चाहिए।

संदर्भ

1. प कामता प्रसाद गुरु: हिन्दी व्याकरण, नागरीप्रचारिणी सभा , प्रभात प्रकाशन, 2018

2. टंडन सना: फ्लावर्स एण्ड देयर मीनिंगस , नोशन प्रेस , 2022
3. विजय:: फ्लावर – देयर स्पिरिचुअल सिग्निफिकन्स, श्री अरबिंदो आश्रम पब्लिकैशन, 1998
4. डाइट्ज़ एस टी : द कम्प्लीट लैंग्वेज ऑफ फ्लावर्स , वेलफलेट प्रेस, यू एस , 2022
5. स्वामी रामसुख दास : सत्संग के फूल , गोरखपुर गीत प्रेस , 1923
6. जैन सुधांशु कुमार: औषधीय पौधे, नैशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, 1968
7. सक्सेना ओम प्रकाश: यूनानी एवं तिबब चिकित्सा , डी पी बी पब्लिकैशन , 2024
8. अग्रवाल आर एस : प्राचीन यूनानी चिकित्सा , मनोज पब्लिकैशन , 2024
9. एनोनीमस: नैशनल फॉर्मूलरी ऑफ यूनानी मेडिसन , भाग 1– 6 , केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार, 2006
10. एनोनीमस: द वेल्थ ऑफ इंडिया ,1– 11, नैशनल इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस कम्यूनिकेशन एण्ड रिसर्च , 2003
11. एमबस्ट एस पी, के रामचंद्रन, के कश्यप और आर चंद : द यूस्फल प्लांट्स ऑफ इंडिया, पी आई डी , सी एस आई आर , नई दिल्ली , 1996
12. चोपड़ा आर एन , नायर एस अल , चोपड़ा आई सी : ग्लॉसारी ऑफ इंडियन मेडिसीनल प्लांट्स , नैशनल इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस कम्यूनिकेशन्स एण्ड इनफार्मेशन रिसोर्सेज , नई दिल्ली। 2006
13. चोपड़ा आर एन , नायर एस अल , चोपड़ा आई सी : ग्लॉसारी ऑफ इंडियन मेडिसीनल प्लांट्स , नैशनल इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस कम्यूनिकेशन्स एण्ड इनफार्मेशन रिसोर्सेज , नई दिल्ली। 2006
14. कीर्तिकर के आर, बसु बी डी: इंडियन मेडिसिनल प्लांट्स , भाग 3 , बिशन सिंह महिंद्रा पाल सिंह, देहरादून 1998
15. नादकर्णी के एम: इंडियन मटेरिया मेडिका , भाग 1 , बॉम्बे पोपुलर प्रकाशन प्रा लि 1989